https://www.developindiagroup.co.in/

यू.पी.एस.सी.

संघ लोक सेवा आयोग

सिविल सर्विसेज प्रारम्भिक परीक्षा

पूर्णतः परिवर्तित एवं संशोधित अध्ययन सामाग्री

सामान्य अध्ययन

प्रश्नपत्र – 1

भारतीय इतिहास एवं संस्कृति

प्राचीन भारत के अध्ययन हेतु पुरातात्विक स्रोतों का विशेष महत्त्व माना जाता है। इन स्रोतों से भारतीय इतिहास के अनेक अंध–युगों पर प्रकाश पड़ता है। पुरातात्विक स्रोतों के तीन प्रकार स्वीकार किए जाते हैं – (1) अभिलेख, (2) मुद्रा, (3) स्मारक।

1. **अभिलेख :** पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत अभिलेख को स्वीकार किया जाता है। इन अभिलेखों का ऐतिहासिक महत्त्व साहित्यिक स्रोतों से अधिक माना जाता है। अभिलेख अधिकतर पत्थर या धातु की चादरों पर खुदे मिले हैं।
   - सबसे प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोघजकोई में प्राप्त हुए हैं। यह लगभग 1400 ई.पू. के हैं तथा इनसे ऋग्वेद की तिथि ज्ञात करने में सहायता मिलती है।
   - भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख मौर्य शासक अशोक के माने जाते हैं। इन अभिलेखों से अशोक के धर्म और राजत्व के आदर्श पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है।
   - अशोक के उपरांत अभिलेखों को हम दो वर्गों में बांट कर देख सकते हैं – सरकारी अभिलेख एवं निजी अभिलेख। सरकारी अभिलेखों में राजकवियों की प्रशस्तियां एवं भूमि अनुदान पत्रों को शामिल किया जाता है।
   - प्रशस्ति का प्रमुख उदाहरण समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति को माना जाता है। इस प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की विजयों और नीतियों का पूरा विवेचन मिलता है। उसी प्रकार राजा भोज की ग्वालियर प्रशस्ति में इस शासक की उपलब्धियों का विवेचन मिलता है।
   - इस प्रकार के अन्य उदाहरण कलिंगराज खारवेल का हाथीगुम्फा अभिलेख, रुद्रदामा का गिरनार अभिलेख, गौतमीबलश्री का नासिक अभिलेख आदि। भूमि अनुदान–पत्रों को अधिकतर तांबे की चादरों पर अंकित किया जाता था।
   - इन अनुदान पत्रों में भूमिखंडों की सीमाओं के उल्लेख के साथ–साथ उस अवसर का वर्णन मिलता है, जब वह भूमिखंड दान दिया जाता था। इन अनुदान–पत्रों में शासकों की उपलब्धियों का भी वर्णन मिलता है।
   - निजी अभिलेख अधिकतर मंदिरों या मूर्तियों पर अंकित किए जाते थे। इस प्रकार के अभिलेखों से मूर्तिकला और वास्तुकला के विकास पर प्रकाश पड़ता है और तत्कालीन धार्मिक दशा की जानकारी प्राप्त होती है।
   - इन अभिलेखों से भाषाओं के विकास की जानकारी भी प्राप्त होती है। इनसे तत्कालीन राजनीतिक दशा पर भी प्रकाश पड़ता है।

2. **सिक्के :** पुरातात्विक स्रोतों में मुद्राओं या सिक्कों का विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है। भारत के अधिकतर शासकों ने अपने सिक्के प्रचुर मात्रा में ढलवाए थे, जिनसे उनके आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक आदि दशाओं पर प्रकाश पड़ता है।
   - भारत के प्राचीनतम सिक्कों को 'आहत–सिक्के' कहा जाता है, इन पर विभिन्न प्रकार के चिन्ह पाए जाते हैं, परंतु उन पर कोई लेख प्राप्त नहीं होता है।
   - इन्हीं सिक्कों को साहित्य में 'कार्षापण', 'धरण', 'शतमान' आदि कहा गया है। इन सिक्कों को शासकों के अतिरिक्त व्यापारी, निगम, श्रेणियां आदि भी ढलवाते थे। सर्वप्रथम सिक्कों पर लेख लिखवाने का कार्य यवन शासकों के द्वारा किया गया।
   - इन सिक्कों पर शासकों की आकृति भी अंकित की जाने लगी, जिससे राजनीतिक इतिहास को जानने में सहायता मिलती है। मौर्योत्तर काल की अधिकतर जानकारी सिक्कों से ही प्राप्त होती है।
   - उसी प्रकार गुप्त सम्राटों के द्वारा विभिन्न प्रकार के सिक्के ढलवाए गए थे। गुप्तोत्तर काल में सिक्कों की मात्रा कम पाई जाती है। मुद्राओं या सिक्कों से तत्कालीन आर्थिक दशा एवं सम्बंधित राजाओं के साम्राज्य की सीमाओं का भी पता चलता है।
   - किसी काल में सिक्कों की बहुलता देखकर हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि उस काल का व्यापार–वाणिज्य उन्नत दशा में होगा। उसी प्रकार सिक्कों की कमी व्यापार–वाणिज्य की अवनति का सूचक माना जाता है। प्राचीन भारत में गणराज्यों का अस्तित्व मुद्राओं से ही पता चलता है, जैसे – मालव, यौधेय, पांचाल आदि।

3. **स्मारक :** इस स्रोत के अंतर्गत प्राचीन इमारतों, मंदिरों, मूर्तियों आदि को शामिल किया जाता है। इन सभी के द्वारा विभिन्न युगों की सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का पता चलता है।
   - मंदिरों, विहारों तथा स्तूपों से जनता की धार्मिक दशा का वर्णन मिलता है। उसी प्रकार हड़प्पा और मोहनजोदाड़ो जैसे नगरों के उत्खनन से सैंधव सभ्यता का पता चलता है।
   - अतरंजीखेड़ा नामक स्थल की खुदाई से पता चलता है कि देश में लोहे का प्रयोग ई.पू. 1000 के आसपास आरम्भ हो गया था। दक्षिण भारत के कई स्थानों की खुदाई से विदेशों से व्यापार का पता चलता है जैसे अरिकौमेडु नामक स्थान की खुदाई से रोम के साथ व्यापार का पता चलता है। उसी प्रकार प्राचीन काल में कुषाणों, गुप्त शासकों और गुप्तोत्तर काल में जो मूर्तियां बनाई गई थी उनसे

Develop India Group

जनसाधारण की धार्मिक आस्थाओं और मूर्तिकला के विकास पर प्रकाश पड़ता है।

- कुषाण काल की मूर्तिकला पर विदेशी प्रभाव अधिक दिखाई देता है। उसी प्रकार गुप्तकाल की मूर्तिकला में अंतरात्मा और मुखाकृति में जो सामंजस्य है, वह अन्य किसी काल में नहीं मिलता है।
- भारहूत, बोधगया, सांची और अमरावती की मूर्तिकला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।
- उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि पुरातात्विक स्रोतों की सहायता से प्राचीन भारत के इतिहास को तर्कसंगत रूप से समझा जा सकता है।

साहित्यिक स्रोत

इतिहास निर्माण में साहित्यिक स्रोतों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है इन्हें इनके लेखन उद्देश्यों व प्रमुखताओं के आधार पर धार्मिक साहित्य व लौकिक साहित्य में विभाजित किया जाता है।

1. धार्मिक साहित्य : प्राचीन भारत के इतिहास के स्रोत के रूप में उपयोगी धार्मिक साहित्यों में ब्राह्मण धर्मग्रंथ, बौद्ध ग्रंथ तथा जैन धर्म ग्रंथ आते हैं। ब्राह्मण धर्म ग्रंथ में वैदिक व वैदिकेत्तर साहित्य तथा अन्य साहित्य आते हैं।

- पुरातात्विक स्रोतों के अंतर्गत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रुप में अभिलेख को स्वीकार किया जाता है। प्राचीन भारत के अधिकतर अभिलेख पाषाण शिलाओं, स्तम्भों, ताम्रपत्रों, दीवारों तथा प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण किए गए हैं।
- सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगजकोई नामक स्थान से लगभग 1400 ई.पू. में मिले हैं। इस अभिलेख में इंद्र, मित्र, वरूण और नासत्य आदि वैदिक देवताओं के नाम मिलते हैं।
- भारत में सबसे प्राचीन अभिलेख अशोक के हैं जो लगभग 300 ई. पू. के हैं।
- मास्की, गुज्जर्रा, निट्टूर एवं उदेगोलम से प्राप्त अभिलेखों में अशोक के नाम का स्पष्ट उल्लेख है।
- अशोक के अधिकतर अभिलेख ब्राह्मी लिपि में है। केवल उत्तर–पश्चिमी भारत के कुछ अभिलेख खरोष्ठी लिपि में हैं।
- लघमान एवं शरेकुना से प्राप्त अशोक के अभिलेख यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में हैं। इस प्रकार अशोक के अभिलेख मुख्यतः ब्राह्मी, खरोष्ठी, यूनानी तथा आरमेइक लिपियों में मिले हैं।
- प्रारम्भिक अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखे गए किंतु गुप्त तथा गुप्तोत्तर काल के अधिकतर अभिलेख संस्कृत में लिखे गए।
- कुछ गैर–सरकारी अभिलेख जैसे यवन राजदूत हेलियोडोरस का बेसनगर (विदिशा) से प्राप्त गरुण स्तम्भ लेख, जिसमें द्वितीय शताब्दी ई.पू. में भारत में भागवत धर्म के विकसित होने के साक्ष्य मिलते हैं।
- भारत में सबसे अधिक अभिलेख मैसूर में मिले हैं।
- सर्वप्रथम 1837 ई. में जेम्स प्रिंसेप ने ब्राह्मी लिपि में लिखित अशोक के अभिलेखों को पढ़ा था।
- सिक्के के अध्ययन को 'मुद्राशास्त्र' कहते हैं। पुराने प्राचीन काल में सिक्के अधिकतर तांबा, चांदी, सोना और सीसा धातु के बनते थे।
- पकाई मिट्टी के बने सिक्कों के सांचे ईसा की आरम्भिक तीन सदियों के मिलते हैं। इनमें से अधिकांश सांचे कुषाण काल के पाए गए हैं।
- आहत सिक्के या पंचमार्क सिक्के भारत के प्राचीनतम सिक्के हैं जो ई.पू. पांचवीं सदी के हैं। इनको ठप्पा मारकर बनाया जाता था। आहत मुद्राओं की सबसे पुरानी निधियां (होर्ड्स) पूर्वी उत्तर प्रदेश और मगध में मिली हैं।
- आरम्भिक सिक्के अधिकतर चांदी के होते थे जबकि तांबे के सिक्के बहुत कम मात्रा में होते थे। ये सिक्के 'पंचमार्क सिक्के' कहलाते थे। क्योंकि इन सिक्कों पर पेड़, मछली, सांड, हाथी, अर्द्धचंद्र आदि आकृतियां बनी होती थी।
- प्राचीन काल में सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल में मिले हैं जो विशेषतः सीसे, चांदी, तांबा व सोने के हैं। सातवाहनों ने सीसे तथा गुप्त शासकों ने सोने के सर्वाधिक सिक्के जारी किए। सर्वप्रथम लेख वाले स्वर्ण सिक्के हिन्द–यूनानी (इंडो–ग्रीक) शासकों ने चलाए।
- कुषाण कालीन गांधार कला पर विदेशी प्रभाव दिखायी देता है जबकि मथुरा कला पूर्णतः स्वदेशी मानी जाती है।
- भरहुत, बोधगया और अमरावती की मूर्ति कला में जनसाधारण के जीवन की सजीव झांकी मिलती है।

स्मारक एवं भवन

- उत्तर भारत के मंदिर 'नागर शैली', में दक्षिण भारत के 'द्राविड़ शैली' में तथा मध्य भारत के मंदिर 'वेसर शैली' में बनाए जाते थे।
- दक्षिण पूर्व एशिया व मध्य एशिया से प्राप्त मंदिरों तथा स्तूपों से भारतीय संस्कृति के विदेशों में प्रसार पर प्रकाश पड़ता है।

चित्रकला

- अजंता के चित्रों में मानवीय भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। चित्रकला में 'माता और शिशु' तथा 'मरणासन्न राजकुमारी' जैसे चित्रों से गुप्तकाल की कलात्मक उन्नति का पूर्ण आभास मिलता है।
- हड़प्पा, मोहनजोदड़ो इत्यादि स्थलों से प्राप्त मुहरों से उनके धार्मिक रीति–रिवाजों का ज्ञान होता है।
- बसाढ़ से प्राप्त मिट्टी की मुहरों से व्यापारिक श्रेणियों का ज्ञान होता

Develop India Group

है।

साहित्यिक स्रोत

- साहित्यिक स्रोत दो प्रकार के हैं :
  1. धार्मिक साहित्य
  2. लौकिक साहित्य या धर्मेत्तर साहित्य
- धार्मिक साहित्य में ब्राह्मण तथा ब्राह्मणेत्तर ग्रंथ की चर्चा की जा सकती है। ब्राह्मण ग्रंथों में वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण तथा स्मृति ग्रंथ आते हैं।
- ब्राह्मणेत्तर ग्रंथों में बौद्ध एवं जैन साहित्यों से सम्बंधित रचनाओं का उल्लेख किया जाता है।
- लौकिक साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथों, जीवनियां, कल्पना प्रधान तथा गल्प साहित्य का वर्णन किया जाता है।
- **वेद :** ब्राह्मण साहित्य में सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद को माना जाता है। वेदों के द्वारा प्राचीन आर्यों के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है।
- वेदों की संख्या चार है – *ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद* तथा *अथर्ववेद*।
- **ऋग्वेद :** इसकी रचना को 1500 ई.पू. से 1000 ई.पू. के बीच माना जाता हैं। ऋक् का अर्थ होता है छंदों एवं चरणों से युक्त मंत्र।
- ऋग्वेद में कुल दस मंडल एवं 1028 सूक्त हैं। ऋग्वेद के मंत्रों को यज्ञों के अवसर पर देवताओं की स्तुति हेतु ऋषियों द्वारा उच्चरित किया जाता था।
- ऋग्वेद में पहला एवं दसवां मंडल सबसे अंत में जोड़ा गया है। ऋग्वेद के दसवें मंडल के पुरुष सूक्त में चारों वर्णों का उल्लेख मिलता है।
- **यजुर्वेद :** यज का अर्थ है 'यज्ञ'। इसमें यज्ञों के नियमों एवं विधि विधानों का संकलन पाया जाता है।
- यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करने वाला पुरोहित 'अध्वुर्य' कहलाता है। इसके दो भाग हैं – शुक्ल यजुर्वेद एवं कृष्ण यजुर्वेद।
- यह पांच शाखाओं में विभक्त है : (1) काठक, (2) कपिष्ठल, (3) मैत्रायणी, (4) तैत्तिरीय, (5) वाजसनेयी।
- यजुर्वेद के प्रमुख उपनिषद कठ, इशोपनिषद, श्वेताश्वरोपनिषद तथा मैत्रायणी उपनिषद हैं।
- यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों में लिखे गए हैं।
- **सामवेद :** 'साम' का शाब्दिक अर्थ है गान। इसमें मुख्यतः यज्ञों के अवसर पर गाए जाने वाले मंत्रों का संग्रह है। इसे 'भारतीय संगीत का मूल' कहा जा सकता है।
- सामवेद में मुख्यतः सूर्य की स्तुति के मंत्र पाए जाते हैं। सामवेद के मंत्रों को गाने वाला 'उद्गाता' कहलाता था।
- सामवेद के प्रमुख उपनिषद छंदोग्य तथा जैमिनीय हैं तथा मुख्य ब्राह्मण ग्रंथ 'पंचविश' को माना जाता है।
- **अथर्ववेद :** इसकी रचना सबसे अंत में हुई थीं। इसमें 731 सूक्त, 20 अध्याय तथा 6000 मंत्र पाए गए हैं। इसमें आर्य एवं अनार्य विचारधाराओं का समन्वय मिलता है।
- अथर्ववेद में परीक्षित को 'कुरुओं का राजा' कहा गया है।
- इसमें ब्रह्म ज्ञान, धर्म, समाजनिष्ठा औषधि प्रयोग, रोग निवारण, मंत्र, जादू–टोना आदि अनेक विषयों का वर्णन है।
- अथर्ववेद का एक मात्र ब्राह्मण ग्रंथ गोपथ ही है। इनके उपनिषदों में मुख्य हैं – मुंडकोपनिषद, प्रश्नोपनिषद तथा मांडूक्योपनिषद।
- **संहिता :** चारों वेदों का सम्मिलित रूप।
- **वेदत्रयी :** ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद के सम्मिलित संग्रह।

ब्राह्मण ग्रंथ

- इनकी रचना संहिताओं की व्याख्या हेतु सरल गद्य में की गई है। ब्रह्म का अर्थ है 'यज्ञ'। अतः यज्ञ के विषयों का प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ 'ब्राह्मण' कहलाते हैं।
- ऐतरेय ब्राह्मण में राज्याभिषेक के नियम तथा कुछ प्राचीन अभिषिक्त राजाओं के नाम दिए गए हैं।
- शतपथ ब्राह्मण में गांधार, शल्य, कैकेय, कुरु, पांचाल, कोशल, विदेह आदि राजाओं के नाम का उल्लेख मिलता है।

आरण्यक

- इन्हें ब्राह्मण ग्रंथ का अंतिम भाग माना जाता है।
- इसमें कोरे यज्ञवाद के स्थान पर चिंतनशील ज्ञान के पक्ष को अधिक महत्त्व दिया गया है। जंगल में पढ़े जाने के कारण इन्हें 'आरण्यक' कहा जाता है।
- उपलब्ध आरण्यक कुल सात हैं :

1. ऐतरेय
2. शांखायन
3. तैत्तिरीय
4. मैत्रायणी
5. माध्यन्दिन वृहदारण्यक
6. तल्वकार
7. छांदोग्य

उपनिषद

- उप का अर्थ है 'समीप' और निषद का अर्थ है 'बैठना'।
- उपनिषद उत्तरवैदिक काल की रचनाएं हैं। इनमें हमें आर्यों के प्राचीनतम दार्शनिक विचारों का ज्ञान मिलता है। इसे पराविद्या या आध्यात्म विद्या भी कहते हैं।
- भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' मुंडकोपनिषद से लिया गया है। उपनिषदों में आत्मा, परमात्मा, मोक्ष एवं पुनर्जन्म की अवधारणा मिलती है।
- उपनिषदों की कुल संख्या 108 मानी गई है किंतु प्रमाणिक

Develop India Group

उपनिषद 12 हैं।

वेदांग

● इनकी संख्या छह है। 1. शिक्षा 2. कल्प 3. व्याकरण 4. निरुक्त 5. ज्योतिष 6. छंद

सूत्र

● वैदिक साहित्य को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए सूत्र साहित्य की रचना की गई थी।

● ऐसे सूत्र जिनमें विधि और नियमों का प्रतिपादन किया जाता है 'कल्पसूत्र' कहे जाते हैं।

● कल्पसूत्र के तीन भाग हैं :

श्रौत सूत्र : यज्ञ सम्बंधी

गृहय सूत्र : लौकिक एवं पारलौकिक कर्त्तव्यों का विवेचन

धर्म सूत्र : धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक कर्त्तव्यों का उल्लेख

● मनुस्मृति के भाष्यकार (टीकाकार) मेधातिथि, गोविंदराज, भारुचि एवं कुल्लूक भट्ट हैं।

● याज्ञवल्क्य स्मृति के टीकाकार विश्वरूप, विज्ञानेश्वर (मिताक्षरा) एवं अपरार्क इत्यादि हैं।

● मनुस्मृति सबसे प्राचीन तथा प्रमाणिक मानी जाती है।

● व्याकरण ग्रंथों में सबसे महत्त्वपूर्ण पाणिनि कृत अष्टाध्यायी है, जो 400 ई.पू. के लगभग लिखा गया था।

● सूत्र साहित्य में आठ प्रकार के विवाहों का उल्लेख मिलता है।

● यास्क ने निरुक्त (ई.पू. पांचवीं सदी) की रचना की। इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति का विवेचन किया गया है।

● महाभारत महाकाव्य की रचना ई.पू. 400 में मानी जाती है। महाभारत की रचना वेद व्यास ने की थी पहले इसमें केवल 8800 श्लोक थे और इसका नाम जय संहिता था। बाद में बढ़कर 24,000 श्लोक हो गए और यह भारत नाम से प्रसिद्ध हुआ। अंत में एक लाख श्लोक होने के कारण इसे शत साहस्त्री संहिता या महाभारत कहा जाने लगा।

● महाभारत का प्रारम्भिक उल्लेख 'आश्वलायन' गृहसूत्र में मिलता है। महाभारत में भी शक, यवन, पारसीक, हूण आदि जातियों का उल्लेख मिलता है।

● **रामायण :** महर्षि बाल्मीकि जी द्वारा रचित रामायण में मुख्यतः 6000 श्लोक थे जो बाद में बढ़कर 12,000 श्लोक हो गए पर अंततः इसमें 24,000 श्लोक हो गए। इसकी रचना सम्भवतः ई.पू. पांचवी सदी में शुरू हुई।

● **पुराण :** भारतीय ऐतिहासिक कथाओं का सबसे अच्छा क्रमबद्ध विवरण पुराणों में मिलता है। पुराणों के रचयिता लोमहर्ष अथवा उनके पुत्र उग्रश्रवा को माना जाता है।

● पुराणों की संख्या 18 है। अधिकांश पुराणों की रचना तीसरी–चौथी शताब्दी में हुई। अमरकोश में पुराणों के पांच विषय बताए गए हैं। मत्स्य पुराण सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक माना जाता है।

● मौर्य वंश के लिए विष्णु पुराण, आंध्र (सातवाहन) तथा शुंग वंश के लिए मत्स्य पुराण तथा गुप्त वंश के लिए वायु पुराण का विशेष महत्त्व है।

ब्राह्मणेत्तर साहित्य

● **बौद्ध साहित्य :** सबसे प्राचीन बौद्ध ग्रंथ त्रिपिटक है। इनके नाम हैं – सुत्तपिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक।

1. *सुत्तपिटक :* बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह। इसे बौद्ध धर्म का 'इनसाइक्लोपीडिया' भी कहा जाता है।
2. *विनयपिटक :* बौद्ध संघ के नियमों का उल्लेख।
3. *अभिधम्म पिटक :* बौद्ध दर्शन का विवेचन (दार्शनिक सिद्धांत)।

● जातकों में बुद्ध के पूर्व जन्मों की काल्पनिक कथाएं मिलती हैं। जातक गद्य एवं पद्य दोनों में लिखे गए हैं जिनमें पद्यांश अधिक प्राचीन है।

● जातकों की संख्या 550 है।

● निकायों में बौद्ध धर्म के सिद्धांत तथा कहानियों का संग्रह है।

● प्राचीनतम बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए है। पालि भाषा में लिखे गए बौद्ध ग्रंथों को द्वितीय या प्रथम सदी ई.पू. का माना जाता है।

● बुद्ध घोष द्वारा रचित ग्रंथ विसुद्धमग्ग बौद्ध धर्म के 'हीनयान' शाखा से सम्बंधित है। इसे बौद्ध सिद्धांतों पर अत्यंत प्रमाणिक दार्शनिक ग्रंथ माना जाता है।

● बौद्ध ग्रंथों को श्रीलंका में ई.पू. द्वितीय शताब्दी में संकलित किया गया था।

● दीपवंश एवं महावंश की रचना क्रमशः चौथी एवं पांचवी शताब्दी में हुई। इन पालि ग्रंथों से मौर्यकालीन इतिहास के विषय में सूचना मिलती है।

● पालि भाषा का एक अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रंथ नागसेन द्वारा रचित मिलिंदपन्हो (मिलिंद प्रश्न) है। इसमें यूनानी राजा मिनांडर और बौद्ध भिक्षु नागसेन का दार्शनिक वार्तालाप मिलता है।

● दिव्यावदान में अनेक राजाओं की कथाएं मिलती हैं। आर्य–मंजु–श्री–मूल–कल्प में बौद्ध दृष्टिकोण से गुप्त सम्राटों का वर्णन मिलता है।

● अंगुत्तर निकाय में सोलह महाजनपदों का वर्णन मिलता है।

● संस्कृत में लिखे गए बौद्ध ग्रंथों में महावस्तु एवं ललित विस्तार का विशेष स्थान है। इसमें महात्मा बुद्ध के जीवनवृत्त का चित्रण मिलता है।

● बौद्ध ग्रंथों में 'अश्वघोष' की संस्कृत भाषा में लिखी गई प्रमुख रचनाएं बुद्धचरित, सौन्दरानंद, सारिपुत्र प्रकरण इत्यादि हैं।

● जैन साहित्य : जैन साहित्य को आगम (सिद्धांत) कहा जाता है। जैन आगमों में सबसे महत्त्वपूर्ण बारह अंग हैं।

● आचारांग सूत्र में जैन भिक्षुओं के आचार नियमों का उल्लेख मिलता है।

● भगवती सूत्र में महावीर के जीवन पर कुछ प्रकाश पड़ता है।

● नायाधम्मकहा में महावीर की शिक्षाओं का संग्रह पाया जाता है।

● जैन आगमों का वर्तमान रूप एक सभा में निश्चित किया गया था जो 513 ई. या 526 ई. (छठी सदी) में बल्लभी में आयोजित हुई थी।

● भगवती सूत्र में सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है।

● जैन धर्म का प्रारम्भिक इतिहास 'कल्पसूत्र' (लगभग चौथी शती ई.पू)